❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 जुलाई, 2024 से रविवार 28 जुलाई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं आर्यसमाज ट्राई स्टेट द्वारा

होफ्स्ट्रा यूनिवर्सिटी, लॉंग आईलैंड, न्यूयार्क (अमेरिका) में 18-21 जुलाई, 2024

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

यदि महर्षि दयानन्द न होते तो आर्य समाज भी न होता और हम भी न होते - योगगुरु स्वामी रामदेव

देश, काल और परिस्थिति के अनुसार चुनौतियों का सामना करेगा आर्य समाज - सुरेशचन्द्र आर्य

200वीं जयन्ती के आयोजनों की श्रृंखला - आर्यसमाज को नई दिशा देने में सक्षम - सुरेन्द्र कुमार आर्य

महर्षि की शिक्षाओं को अपनाकर ही होगा सुखी और समृद्ध विश्व समुदाय - स्वामी देवव्रत सरस्वती

महर्षि दयानन्द जैसा गुरु और आर्य समाज जैसा संगठन दुनिया में नहीं : आर्यसमाजी होने का गौरव मनाएं आर्यजन - विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली सभा

2025 के आयोजनों की अभी से करें विश्वस्तर पर तैयारी

आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास में आर्य महासम्मेलनों और अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलनों का सदा से विशेष महत्व रहा है। आज जब पूरे भारत देश और दुनिया में महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्यसमाज के 150 वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला गतिशील है, तब आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं आर्य समाज ट्राई स्टेट द्वारा 18 से 21 जुलाई 2024 तक न्यूयार्क अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भव्य समारोह के रूप में संपन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ, योग, सत्संग, भजन, एक शाम ऋषि के नाम, प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित देश और विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को लेकर महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों शिक्षाओं को आधार बनाकर आर्य समाज की मान्यताओं, परमपराओं और सिद्धांतों के प्रचार प्रसार और विस्तार के लिए गहन चिंतन मनन और विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर भारत, सिंगापुर, मॉरिशस, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, सूरीनाम, गयाना, न्यूजीलैंड, हॉलैंड और अनेक अन्य देशों से आर्य नर-नारी सम्मलित हुए। भारत से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चैयरमेन तथा ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी सपत्नीक, आचार्य स्वामी श्री देवव्रत जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, सभा के उपप्रधान

- शेष पृष्ठ 4 पर

देश की विभूतियों ने हमेशा माना है महर्षि दयानन्द को आदर्श महापुरुष - किन्तु ....

रामभद्राचार्य जी के अनर्गल प्रलाप से आर्यसमाज में रोष : अपने शब्दों को लें वापस

कथावाचक श्री रामभद्राचार्य जी द्वारा महर्षि दयानन्द के प्रति सामूहिक रूप से पूरे होशोहवास में अपने सत्संग के समय आक्षेप लगाते हुए कहा गया कि **"महर्षि दयानंद सरस्वती ने बहुत बड़ी भूल की, जो रामायण और महाभारत को कल्पित ग्रंथ कहा, आज वो होते तो उन्हें बड़ा संकोच होता।"**

जबकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखा है - **"मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योग पर्व के अंतर्गत विदुर नीति आदि अच्छे प्रकरण जिससे दुष्ट व्यसन दूर हों और उत्तमता, सभ्यता प्राप्त हो, इनको एक वर्ष के भीतर पढ़ लें।"**

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनगिनत उपकारों के प्रति समय समय पर देश की महान विभूतियों ने अपने प्रेरक उदगार प्रस्तुत किये हैं, जिनमें लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, अमर शहीद पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, दादा भाई नौरोजी, सरदार बल्लभ भाई पटेल,

- शेष पृष्ठ 7 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दी

रामभद्राचार्य जी को शास्त्रार्थ की चुनौति

सोशल मीडिया से हटाई गई विवादित वीडियो

चुनौति पत्र पृष्ठ 3 पर

देववाणी-संस्कृत

स्वार्थ त्याग कर पवित्रान्तः करण से नित्य आपकी वन्दना करें

वेद-स्वाध्याय

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम नमो भरन्त एमसि।।
-ऋ 1/1/ 7; साम० पू० 1/1/4
ऋषिः- मधुच्छन्दाः ।। **देवता**- अग्निः ।। **छन्दः** - गायत्री।।

शब्दार्थ- **अग्ने** = हे अग्ने! **वयम्** = हम **दिवे दिवे** = प्रतिदिन **दोषावस्तः** = रात और दिन के समय **धिया** = बुद्धि व नमः व कर्म से **नमः भरन्तः** = नमस्कार की भेंट लाते हुए **त्वा** = तेरे **उप** = समीप **एमसि** = आ रहे हैं।

विनय- जब से हम उत्पन्न हुए हैं, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन आता-जाता है। प्रतिदिन एक नया-नया दिन और एक नयी-नयी रात आती-जाती है। इस प्रकार वह अनवरत, अविश्रान्त काल-चक्र चल रहा है। इस काल-चक्र में हम कहाँ जा रहे हैं? हे मेरे प्रभो! अग्निदेव! तुमने तो ये अहोरात्र इसलिए रचे हैं कि प्रत्येक अहोरात्र के साथ अपनी आत्मिक उन्नति का दायाँ और बायाँ पैर आगे बढ़ाते हुए हम प्रतिदिन तुम्हारे निकट पहुँचते जाएँ। यदि हम प्रत्येक अहोरात्र के आरम्भ में, अर्थात् प्रातःकाल और सायं काल के समय में अपनी बुद्धि द्वारा तुम्हारे आगे झुकते हुए, नमन करते हुए तथा कर्म द्वारा भी अपने ''नमः'' की भेंट तुम्हारे प्रति लाते हुए, तुम्हारे लिए स्वार्थ-त्याग करते हुए चलेंगे तो यह दिन-रात चक्र हमें एक दिन तुम्हारे चरणों में पहुँचा देगा। इसलिए, हैं अग्निरुप परमदेव! हम आज से निश्चय करते हैं कि हम प्रत्येक अहोरात्र को (प्रातःकाल और सायं काल) अपनी बुद्धि तथा कर्म द्वारा तुम्हें नमस्कार की भेंट चढ़ाते हुए (आत्म-समर्पण व स्वार्थ-याग करते हुए) ही अब जीएँगे और इस तरह जहाँ प्रत्येक दिन के श्रमय काल में हमारा दायाँ पैर तुम्हारी और बढ़ेगा, वहाँ प्रत्येक रात्रिकाल में हमारी उन्नति का बायाँ पैर उस उन्नति को स्थिर करता जाएगा। हे प्रभो! ये दिन-रात इसीलिए आते हैं। निश्चय ही आज से प्रत्येक अहोरात्र हमें तुम्हारे समीप लाता जाएगा। आज से प्रतिदिन हम स्वार्थ-त्याग द्वारा पवित्रान्तः करण होते हुए और पवित्रान्तःकरण से प्रातः-सायं तुम्हारी वन्दना करते हुए प्रतिदिन तुम्हारी ओर आने लगे हैं, हे प्रभो! प्रतिदिन तुम्हारे समीप आते जा रहे हैं।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कावड़ यात्रा की व्रत पवित्रता को लेकर सरकार के ओदश पर कोर्ट ने लगाई रोक

नाम लिखने पर एकतरफा चीख-पुकार क्यों ?

कावड़ यात्रा शुरू होने से पहले मुजफ्फरनगर में पुलिस ने निर्देश जारी किया था। इसमें लिखा था कि यात्रा के रूट पर पड़ने वाली दुकानों, ढाबों और ठेलों पर विक्रेता का नाम लिखना जरूरी होगा। पुलिस का यह आदेश थोड़ी देर बाद बवाल बन गया और उस बवाल का पोछा बनाकर अपनी राजनीति चमकाने वाले सामने आ गए। किसी ने कहा, मुसलमानों के साथ यहूदियों-सा व्यवहार हो रहा है, तो किसी ने कहा अब्दुल का बेचा सेब मीट नहीं हो जाता, किसी ने कहा मांसाहार तो हिंदू भी करते हैं।

ओवैसी ने तो यहाँ तक लिखा कि अब हर खाने वाली दुकान या ठेले के मालिक को अपना नाम बोर्ड पर लगाना होगा ताकि को कांवड़िया गलती से मुसलमान की दुकान से कुछ न खरीद ले। इसे दक्षिण अफ्रीका में अपार्थाइड कहा जाता था और हिटलर की जर्मनी में इसका नाम 'जूडेनबॉयकॉट' था इसके अलावा विपक्ष ने भी योगी सरकार को इस निर्देश पर जमकर घेरा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव, बसपा सुप्रीमो मायावती समेत कई अन्य नेताओं ने इस आदेश का विरोध किया। कहा इससे एक गलत परंपरा की शुरुआत होगी।

ऐसे में सवाल है कि क्या मामला सिर्फ इतना ही है? और क्या प्रशासन ने मीट मांस नॉनवेज के कारण ऐसा फरमान जारी किया है? कुछ लोग कह रहे हैं कि फलों की रेहड़ी से को कैसे नॉनवेज बेच सकता है? मान लिया फल की दुकान या रेहड़ी से नॉनवेज का को मतलब नहीं है, लेकिन मानसिकता कुछ भी करा सकती है। 26 मार्च 2024 को हिंदुस्तान अख़बार में एक खबर थी कि फलों पर थूक लगाकर बेचने वाले विक्रेता के खिलाफ केस दर्ज किया गया। यह केवल एक खबर नहीं है, रोज़ाना सोशल मीडिया पर कोई न कोई को वीडियो आती है, जिसमें को फलों पर थूकता या पेशाब करता हुआ दिखा देता है।

एक जुलाई 2024 को उत्तर प्रदेश के मेरठ में वकीलों ने 'मो. इस्लाम' को आम पर पेशाब करते हुए पकड़ा। जब रास्ते से गुजर रहे वकीलों ने देखा कि 'मो. इस्लाम' आम पर पेशाब कर रहा है, तो एक वकील गुस्से में आ गया क्योंकि वह लंबे समय से कचहरी के पास रेहड़ी लगा रहा था। इसके अलावा, उन्होंने कहीं दूध में थूकने, पानी में थूकने, फल पर थूकने, रोटी पर थूकने और सेविंग करते हुए मुंह पर थूकने की वीडियो देखी है, और इसके अलावा मशहूर हेयर ड्रेसर जावेद हबीब ने एक महिला के सिर पर थूकते हुए कहा है कि इस थूक में ताकत है। केवल थूक ही नहीं, पिछले साल उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में कांवड़ यात्रा के दौरान इसके यात्रा मार्ग पर पड़ने वाले सभी मुसलमान मालिकों के सभी होटल और कथित तौर पर बंद कर दिए गए थे। इनमें मांसाहारी और शाकाहारी, दोनों तरह के होटल शामिल थे। कांवड़ यात्रा मार्ग के वे सभी होटल और ढाबे करीब 15 दिन बंद रहे, जिनके मालिक या स्टाफ मुसलमान थे। उसका कारण था कि अधिकांश मुसलमान पौराणिक देवी-देवताओं के नाम पर ये ढाबे खोले बैठे थे। और यह पहली बार नहीं है कांवड़ यात्रा के मार्गों पर हाल के वर्षों की कांवड़ यात्रा के दौरान मांस या मछली की दुकानें बंद करवाई जाती रही हैं। पिछले साल एनएच-58 पर एक ओम शिव वैष्णो ढाबा था। मालिक का नाम था आदिल जब इसका विरोध हुआ तब जाकर इसका नाम 'वेलकम टू पिकनिक पॉइंट टूरिस्ट ढाबा' किया गया। इससे पहले भी आदिल मीरापुर में बाबा अमृतसरी के नाम से कई साल होटल चला चुका है। दरअसल, ढाबों में कांवड़ यात्रियों के लिए अलग से व्यवस्था होने का दावा किया जाता है, इन ढाबों में वेज और नॉनवेज सब कुछ बनता है लेकिन कावंडियों के सामने शुद्ध शाकाहारी ढाबा होने का दावा किया जाता है। वहीं कावंडियों की इस बात की रत्ती भर भी भनक नहीं होती कि ढाबा चलाने वाले किस समुदाय के लोग हैं। जब विवाद मचा तो ज़ी न्यूज़ की टीम ने पड़ताल की टीम

मसलन, पुलिस का आदेश था कि दुकानों के बाहर नाम लिखें। पुलिस ने हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई लिखने को नहीं कहा था। लेकिन नाम से ही बवाल हो गया और सबसे बड़ा बवाल हुआ अरबी भाषा में नाम लिखने वालों को। जैसे ही आरिफ आम वाला, निसार फल वाला नाम से मुजफ्फरनगर में ठेलों पर पोस्टर टंगे। बस इसे सीधा मजहब-ए-इस्लाम से जोड़ दिया गया। जबकि इस आदेश का धर्म और मजहब से कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन विवाद हुआ और यह विवाद सुप्रीम कोर्ट में पहुंचा, जहां न्यायालय में प्रशासन के इस निर्देश पर रोक लगा दी। और लगभग सभी दुकानदारों ने तुरंत अपने नामों के बोर्ड हटा दिए।

देहरादून-नैनीताल हाइवे पर पहुंची तो वहां 20 से ज़्यादा ऐसे ढाबे मिले जो पौराणिक देवी देवताओं के नाम पर हैं और इन्हें चलाने वाले मुस्लिम समाज के लोग हैं। इनमें श्री खाटू श्याम ढाबा, नीलकण्ठ फैमिली रेस्टोरेंट, हिमालयन ढाबा, सैनी रेस्टोरेंट, पंजाबी ढाबा, न्यू पंजाबी रेस्टोरेंट और शिव ढाबा के नाम से ढाबे चल रहे हैं।

इसके अलावा, यूपी के सहारनपुर में भी ऐसे ही पौराणिक देवी देवताओं के नाम पर क ढाबे चलते पाए गए, जिसमें एक था जनता वैष्णो ढाबा और उसके मालिक भी मुस्लिम समुदाय के ही निकले। इसके बाद बात अगर हलाल की हो तो सब मुसलमान एक जाते हैं। हलाल का मतलब है कि जब खेती के उपयोग में आने वाली भूमि, फल उगाने वाला किसान, फल तोड़ने वाले मजदूर से लेकर मंडियों तक पहुँचाना, फिर उसकी पैकिंग, बाद में उसे बाजार में ग्राहकों तक पहुँचाने का हर काम जब एक समुदाय विशेष के लोग ही करें, तब वह हलाल है। अगर ऐसा हिन्दू करें तो उसे साम्प्रदायिकता कहा जाता है, जैसे कि जर्मनी का ''जूडेनबॉयकॉट '' और दक्षिण अफ्रीका का अपार्थाइड कहा जाता है।

अगर ओवेसी के अनुसार, दुकानों और ढाबों के बाहर नाम लिखना जर्मनी का जूडेनबॉयकॉट और दक्षिण अफ्रीका का अपार्थाइड है, तो मस्जिदों के बाहर शिया मस्जिद, अहमदिया मस्जिद, सुन्नी मस्जिद, देवबंदी मस्जिद, अहले हदीस मस्जिद लिखना क्या है? कब्रिस्तान के बाहर हर फिरके वाले अपना नाम क्यों लिखते हैं और अगर भूल से एक फिरका दूसरे फिरके के कब्रिस्तान में मुर्दा दफना दे तो हराम हो जाता है? क्या वह जर्मनी का ''जूडेनबॉयकॉट'' और दक्षिण अफ्रीका का अपार्थाइड नहीं होता?

इसके अलावा थोड़े दिन पहले की बात है, मेरठ में एक शादी समारोह में तंदूरी रोटी पर थूक लगाने का वीडियो वायरल हुआ था। जब रोटी बनाने वाले युवक नौशाद को पकड़ा गया तो कई चीजें सामने आई थीं। सवाल उठा था कि ऐसे ना जाने कितने नौशाद शादियों में, रेस्टोरेंट में, होटल में, ढाबों में काम कर रहे हैं? और नित्य प्रतिदिन इसी प्रकार की हीन भावना से ग्रस्त घृणित मानसिकता से भरी कार्यवाहियां कर रहे हैं। यह केवल भारत ही नहीं, थोड़े समय पहले की बात है। डेली मेल में एक खबर छपी थी कि ब्रिटेन में, एक रेस्टोरेंट के मालिक मोहम्मद अब्दुल बासित - *शेष पृष्ठ 7 पर*

स्वामी रामभद्राचार्य जी का अनर्गल प्रलाप

- डॉ. विवेक आर्य

वेदों में राम, कृष्ण आदि शब्दों के नाम पर ही नामकरण हुए हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वेदों में श्री राम और श्री कृष्ण जी आदि का वर्णन हैं।

ऋग्वेद 2/2/8 में आये राम्या: का अर्थ स्वामी दयानन्द ने रात्रि किया है। ऋग्वेद 6/65/1 में आये राम्यासु का अर्थ स्वामी दयानन्द ने रात्रि किया है। ऋग्वेद 3/34/12 में आये रामी: का अर्थ स्वामी दयानन्द ने आराम की देने वाली रात्रि किया है। ऋग्वेद 10/3/3 में आये राम शब्द का सायण ने अर्थ कृष्ण रंग वाला किया है। इस प्रकार से राम शब्द के अर्थ वेदों में काले रंग, अन्धकार और रात्रि के रूप में हुए हैं। इनसे रामायण के पात्र श्रीराम किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं होते। वैद्यनाथ शास्त्री और अमर सिंह जी निरुक्त 12/13 का उद्धरण देकर राम शब्द से काला ग्रहण करते हैं।

स्वामी रामभद्राचार्य जी का एक वीडियो प्रचारित हो रहा है। भद्राचार्य जी ने स्वामी दयानन्द जी पर अनावश्यक टिप्पणी करते हुए कहा कि स्वामी जी ने रामायण और महाभारत को काल्पनिक बताया हैं। भद्राचार्य जी का कहना है कि श्री राम और श्री कृष्ण जी का वेदों में वर्णन है।

भद्राचार्य जी ने यह टिप्पणी कर अपनी अज्ञानता का परिचय दिया है। उनकी भ्रान्ति का निवारण आवश्यक है। राम और कृष्ण मानवीय संस्कृति के आदर्श पुरुष हैं। कुछ बंधुओं के मन में अभी भी यह धारणा है कि महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज राम और कृष्ण को मान्यता नहीं देता है। प्रत्येक आर्य अपनी दाहिनी भुजा ऊँची उठाकर साहसपूर्वक यह घोषणा करता है कि आर्यसमाज राम-कृष्ण को जितना जानता और मानता है, उतना संसार का कोई भी आस्तिक नहीं मानता। कुछ लोग जितना जानते हैं, उतना मानते नहीं और कुछ विवेकी-बंधु उन्हें भली प्रकार जानते भी हैं, उतना ही मानते हैं।

1. मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के संबंध में स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है:-

"प्रश्न-रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेद-विरुद्ध होती तो रामचन्द्र मूर्ति स्थापना क्यों करते और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर- रामचन्द्र के समय में उस मन्दिर का नाम निशान भी न था किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ 'राम' नामक राजा ने मंदिर बनवा, का नाम 'रामेश्वर' धर दिया है। जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे, तब सीताजी से कहा है कि-

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतु बंध इति विख्यातम्।।

वा.रा., लंका काण्ड (देखिये- युद्ध काण्ड़, सर्ग 123, श्लोक 20-21)

'हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना- ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु (व्यापक) देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहां प्राप्त हुई । और देख! यह सेतु हमने बांधकर लंका में आ के, उस रावण को मार, तुझको ले आये।' इसके सिवाय वहां वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा। (द्रष्टव्य- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास:, पृष्ठ-303)

इस प्रकार उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भगवान राम स्वयं परमात्मा के परमभक्त थे। उन्होंने ही रामसेतु बनवाया था।

2. स्वामी दयानन्द रामायण और महाभारत को काल्पनिक मानते तो सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में पठन-पाठन विषय के अंतर्गत स्वामी जी वाल्मीकि रामायण और महाभारत के पढ़ने का विधान नहीं करते।

स्वामी दयानन्द लिखते हैं - "तत्पश्चात मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योगपर्व अंतर्गत विदुरनीति आदि अच्छे प्रकरण जिनसे दुष्ट व्यसन दूर हों और उत्तम सभ्यतागति हो, वैसे काव्यरीति अर्थात पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य, विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी लोग जानते जायें।" इससे स्पष्ट प्रमाण नहीं मिल सकता।

3. स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज श्री कृष्ण जी को योगिराज के रूप में सम्मान देता हैं। स्वामी दयानंद जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण जी महाराज के बारे में लिखते हैं।

"पूरे महाभारत में श्री कृष्ण के चरित्र में कोई दोष नहीं मिलता एवं उन्हें आप्त (श्रेष्ठ) पुरुष कहा है। स्वामी दयानंद श्री कृष्ण जी को महान् विद्वान् सदाचारी, कुशल राजनीतीज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते हैं फिर श्रीकृष्ण जी के विषय में चोर, गोपिओं का जार (रमण

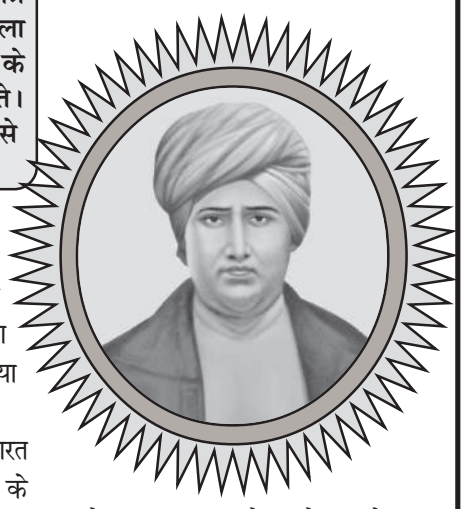

करने वाला), कुब्जा से सम्भोग करने वाला, रणछोड़ आदि प्रसिद्ध करना उनका अपमान नहीं तो क्या है?"

बोलो योगिराज श्री कृष्ण जी की जय।

4. स्वामी दयानन्द के पूना प्रवचन में इक्ष्वाकु से लेकर महाभारत पर्यन्त इतिहास पर विस्तार से चर्चा की हैं। अगर स्वामी जी रामायण और महाभारत को काल्पनिक मानते तो इनकी चर्चा क्यों करते?

5. रामभद्राचार्य जी वेद मन्त्रों में श्री राम जी का वर्णन बता रहे हैं। स्वामी दयानन्द वेदों को इतिहास की पुस्तक नहीं मानते क्यूंकि वेदों का ज्ञान सृष्टि के आदि में प्रकट हुआ हैं। ऐसे में उनमें इतिहास कहाँ से वर्णित होगा।

स्वामी दयानन्द इस विषय पर सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है - "इतिहास जिसका हो, उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्मे पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं। किन्तु जिस-जिस शब्द

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

स्थापित : १९०८ ॥ ओ३म् ॥ Email : aryasabha@yahoo.com
रजिस्टर्ड : १९१४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
(International Arya League)

पंजीकृत कार्यालय :- महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002
पत्र व्यवहार कार्यालय :- 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 टैलिफैक्स : 011-23360150, 23365959

संख्या 2024-2025/03/SAPS — **रजिस्टर ए डी** — दिनांक 24/07/2024

स्वामी रामभद्राचार्य जी
कुलाधिपति
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

विषय:- महर्षि दयानन्द के विरुद्ध असत्य टिप्पणी करने के विषय में।

पूज्य स्वामी जी,

सादर नमस्ते। आशा है आप सकुशल होंगे।

गत दिनांक 20 जुलाई 2024 को आपके यूट्युब चेनल पर से एक विडीओ अपलोड हुआ है जिसका शीर्षक है- **''श्री दयानन्द सरस्वती जी ने कर दी बहुत बड़ी भूल। आर्य समाज''।**

इस विडीओ में आप यह कह रहे हैं कि, **''महर्षि दयानन्द ने सबसे बड़ी भूल कर दी। उन्होंने यह कह दिया कि रामायण और महाभारत सब काल्पनिक हैं''।**

इस विषय में कृपया यह लिखित स्पष्टीकरण देने का कष्ट करें कि **महर्षि दयानन्द ने अपने कौन से ग्रन्थ में व्यास कृत महाभारत और वाल्मीकि कृत रामायण को काल्पनिक बताया है?** इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए आपसे विशेष आग्रह है। आप स्वयं आचार्य हैं और आपके अनुयायी आपको जगद्गुरु मानते हैं, तो अवश्य ही इन वचनों के कहने के पीछे आपके पास महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का प्रमाण होगा। कृपया वही प्रमाण हमें प्रस्तुत करने का अनुग्रह करें।

महर्षि दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में वाल्मीकि रामायण तथा व्यास कृत महाभारत को पढ़ने के लिए स्पष्ट लिखा है। पांचवे, छठे तथा ग्यारहवें समुल्लास में भी उन्होंने महाभारत तथा रामायण के अनेक पात्रों का उल्लेख किया है। उनके पूना के प्रवचनों में भी रामायण का उल्लेख है। उनके जितने भी शास्त्रार्थ हुए उन सारे शास्त्रार्थ में भी उन्होंने वाल्मीकि रामायण और व्यास कृत महाभारत के प्रक्षेप भाग को छोड़कर उन्हें प्रमाण माना है।

इतना ही नहीं - महर्षि दयानन्द ने **श्री राम** और **श्री कृष्ण** को आप्त पुरुष माना है। प्रत्येक आर्य समाज का व्यक्ति उन्हें अपना आदर्श मानता है और आर्य समाज के जयघोष में इन दोनों महापुरुषों का जयघोष भी हमेशा किया जाता है।

इसलिए आपका यह कथन कि महर्षि दयानन्द ने महाभारत और रामायण को काल्पनिक बता दिया, सर्वथा असत्य और छल, कपट से परिपूर्ण है। आपसे आग्रह है कि आप या तो अपने कथन का प्रमाण प्रस्तुत करें अथवा

-: 2 :-

सार्वजनिक रूप से खेद प्रकट करें। क्योंकि आपके इस कथन से सम्पूर्ण आर्यजगत आक्रोशित है और सभी सनातन धर्म प्रेमियों में अकारण भ्रामकता की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

आपके और आपके सभी भक्तों को यह भी ज्ञात होना चाहिये कि विधर्मिओं द्वारा जब इन दोनों महापुरुषों का अपमान करने के लिए **'सीता का छिनाला'** और **'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी'** यह दोनों ग्रन्थ लिखकर उनका अपमान किया गया, तब श्रीराम और श्रीकृष्ण के नाम पर कथा करके करोड़ो कमाने वाले कथाकारो ने तब कुछ भी नहीं किया था। तब केवल आर्यसमाज के ही **पंडित चमुपति** ने विधर्मियों को जवाब देने के लिये **'रंगीला रसुल'** नामक पुस्तक लिखी थी, जिसे आर्य समाजी महाशय राजपाल ने छापा था और इस कृत्य के लिए विधर्मिओ ने उनकी हत्या कर दी थी।

इसी प्रकार जब पंजाब में **मिर्जा गुलाम अहमद** द्वारा श्री कृष्ण की नकली कहानीयाँ बनाकर तथा स्वयं को श्री कृष्ण का अवतार घोषित करके निर्दोष हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया जा रहा था, तब उनके विरुद्ध आर्यसमाज के ही **पंडित लेखराम** जी ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। इससे यह स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने और उनके अनुयायिओं ने सत्य सनातन धर्म की रक्षा के लिये सदैव अपने प्राणों की आहुति दी है।

आपने अपने विडीओ में यह बोला है कि, **'मैं गंगा की कसम खाकर कहता हूं की प्रत्येक वेदमन्त्र से मैं राम कथा दिखा सकता हूं।'** आपके इस वचन का हम स्वागत करते हैं तथा इस विषय पर शास्त्रार्थ द्वारा अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए हम आपको आमन्त्रित करते हैं। आर्यसमाज के विद्वान निम्न विषय पर आपके साथ शास्त्रार्थ करने के लिए तत्पर हैं।

1. क्या महर्षि दयानन्द वाल्मीकि रामायण और व्यास कृत महाभारत को काल्पनिक मानते थे?
2. क्या प्रत्येक वेदमन्त्र में राम कथा का वर्णन है?
3. क्या पाणिनि अष्टाध्यायी सूत्रों में रामकथा का वर्णन है?
4. क्या वेदों में हिन्दू शब्द है?

उपरोक्त विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए आप अपनी अनुकूलता के अनुसार हमें तिथि सूचित कर दें तथा शास्त्रार्थ के नियम और अन्य व्यवस्था पर चर्चा करने के लिए अपने अधिकृत प्रतिनिधि का नाम सूचित कर दें। वेद का प्रचार प्रसार करना महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज का एक मात्र उद्देश्य है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप जैसे विद्वान से शास्त्रार्थ करना सनातन धर्म के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। आशा है आप शास्त्रार्थ के लिए अपनी सहमति अवश्य देंगे।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः''

भवदीय

सुरेशचन्द्र

(सुरेशचन्द्र आर्य)
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दिनांक 24 जुलाई 2024
वि.सं. 2081, श्रावणकृष्ण 03

प्रथम पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी सपत्नीक, संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खटटर जी सपत्नीक श्री मनीष भाटिया जी एवं अन्य आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, विद्वान, संन्यासी पहँचे।

अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ के साथ हुआ, जिसमें श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम आर्या जी, श्रीमती एवं श्री जोगेन्द्र खटटर जी सहित आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के अधिकारी एवं अन्य देशों से आये हुए आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों के अधिकारियों ने परिवार सहित आहुतियां दी और विश्वमंगल के लिए प्रार्थना की। सम्मेलन के उद्घाटन से लेकर समापन समारोह तक हर सत्र में अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के परिवारजन, बच्चों सहित उपस्थित रहे। वहां के आर्यजनों में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का नजारा देखते ही बनता था। महर्षि दयानंद की जय-जयकार के नारे और आर्यासमाज अमर रहे के नारे लगते रहे। चारों तरफ ओ3म ध्वज लहरा रहे थे और सभी आर्यजनों और अधिकारियों ने गले में पीत वस्त्र और पगड़िया पहनी हुई थी।

इस अवसर पर भारत से पहुंचे श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री विट्ठलाराव जी, डॉ. सत्य प्रकाश जी, गयाना, आचार्य स्वामी देवव्रत जी, श्री जोगेन्द्र खटटर जी, श्री विनय आर्य जी, श्री विनय विद्यालंकार जी सहित अमेरिका में प्रवासी भारतीय विद्वानों, संन्यासियों, सभा के अधिकारियों, अन्यों देशों की सभा के अधिकारियों ने विशेष उद्बोधन दिये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने अंतर्राष्ट्रीय आर्य महाम्मेलन में उपस्थित अधिकारी, कार्यकताओं और सदस्यों को अपने संक्षिप्त उद्बोधन दिया, जिसमें उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को 19वीं सदी महामानव के रूप में स्मर्ण करते हुए उनके प्रति विश्वव्यापी आर्य समाज की और कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। अपने विशेष संदेश में आपने कहा कि महर्षि दयानदं सरस्वती जी ने जितने भी परोपकार एवं मानव समाज के कल्याण के लिए कार्य किए, उनमें उन्होंने देश, काल और परिस्थिति को ध्यान में रखा। महर्षि ने देश पराधीनता को देखा, उस समय के लोग को दुख, पीड़ा और संताप से तड़पते देखा, उस समय चारों तरफ त्राहिमाम त्राहिमाम की आवाज सुनी, तब महर्षि ने स्वराज्य, स्वधर्म और स्वभाषा का उद्घोष किया। इसी तरह जब चारो तरफ अज्ञान, अविद्या, अंधकार, ढोग, पाखंड और अंधविश्वास का बोलबाला था। तब महर्षि ने सामाजिक कुरितियों के खिलाफ आवाज उठाई और पाखंड, खण्डनी पताका फहराई। आज जब चारों तरफ अनेक तरह की चुनौतियां सामने हैं तब आर्य समाज को देश काल और परिस्थितियों के हिसाब से ही समाधान निकालने होंगे। आपने आर्य महासम्मेलन के आयोजकों तथा सभी उपस्थित कार्यकर्ता, सदस्यों को बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की। आचार्य स्वामी देवव्रत जी ने अपने संदेश में कहा कि श्रेष्ठ व्यक्तियों का संगठन ही आर्य समाज है। उन्होंने अपने विषय के अनुसार महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को आधार बनाकर कहा कि सुख वहीं है जो इन्द्रियों को अच्छा लगे। और सुख के लिए धर्म को अपनाना जरूरी है, धर्म के लिए धन की जरूरत है और धन के लिए राज्य की आवश्यकता है और राज्य पर शासन करने के लिए इन्द्रियों को जीतना जरूरी है। और इन्द्रियों को जीतने के लिए त्यागी, तपस्वी, साधक, ऋषियों का संग जरूरी है। इसलिए महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षा और विचारों को अपना कर ही विश्व सुखी और समृद्ध हो सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन अमेरिका को ऑनलाइन संबोधित करते हुए योग गुरू स्वामी रामदेव जी ने अपने विशेष उद्बोधन में कहा - महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने 150 वर्ष पहले आर्य समाज की ज्योति जलाई थी। अगर आर्य सामज न होता तो स्वामी रामदेव भी नहीं होते और आप सबके अन्दर भी वैदिक चेतना न होती। आज हरिद्वार से लेकर द्वार-द्वार तक योग, प्राणायाम, यज्ञ आदि का प्रचार प्रसार हो रहा है, ये सब महर्षि की देन है। आज जो भारत वर्ष है यह भी महर्षि का ही उपकार है, अगर 150 वर्ष पहले महर्षि के विचारों के अनुसार कार्य होता तो न तो देश का विभाजन होता और न ये चुनौतियां होती। लेकिन महर्षि के 200 वें जन्म दिवस के सम्मेलन में अमेरिका के आर्यजनों का उत्साह देखते ही बनता है। जब यूएस में इतना उत्साह है तो 2025 में जब भारत में महर्षि की 200वीं जयंती का विशाल आयोजन होगा तो उस अनुष्ठान में पंतजलि योगपीठ और हमारी सभी संस्थाए तन, मन, धन से सहभागी होगें और मैं स्वयं उसमें सम्मिलित रहूंगा। महर्षि के अनुसार शिक्षा और चिकित्सा के कार्य को आगे बढ़ाते हुए एक परिवार की तरह संगठन को भी मजबूत करना होगा। **'सं गच्छध्वं सं वदध्वं'** की भावना को साकार करना हो होगा। विश्व एक नीडम् की भावना के अनुरूप चलने से ही **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का सपना साकार होगा। इस भव्य विशाल आयोजन के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और सभी आयोजकों और सभी आर्यजनो को बधाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कोर कमेटी, श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित विश्व समुदाय को संबोधित करते हुए अपने विशेष संदेश में कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन अपने आप में ऐतिहासिक रूप से प्रशंसनीय है। इस अवसर पर सभी आर्यजनों से कहना चाहता हूँ, कि अपनी उपस्थिति को लेकर यह न सोचे कि हम यहां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 700-800 की संख्या में ही उपस्थित हैं। आर्य समाज का इतिहास रहा है कि हम एक-एक व्यक्ति 1 लाख के बराबर कार्य करने वाला है। संपूर्ण विश्व में आर्य समाज जैसा आंदोलनकारी संगठन नहीं है। हम मानव सेवा और परोपकार के लिए समर्पित होकर चलने वाले लोग हैं। इसलिए हमें हर पल, हर क्षण अपने आर्य होने के गौरव को संजोकर रखना चाहिए। आपने एक प्रेरक उदाहरण देते हुए कहा कि अगर यहां सम्मेलन के अवसर पर अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन जी का संदेश लेकर के यहां उनका कोई एक प्रतिनिधि आ जाए तो विचार कीजिए कि कितनी बड़ी उपलब्धि होगी। इसी तरह प्रत्येक आर्य समाज का व्यक्ति अखंड ब्रह्मण्ड के नायक परमपिता परमात्मा का वैदिक संदेश लेकर आया है। अत: हमें यह अवश्य समझना चाहिए कि आर्य समाज सारे संसार में श्रेष्ठ संगठन है, प्रत्येक आर्य समाजी विलक्षण प्रतिभा का धनी है और यहां उपस्थिति सभी आर्यजन परमार्थ के लिए समर्पित हैं। आर्य समाज ही ऐसा संगठन है कि जो **सर्वे भवन्तु सुखिनः** और **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** की भावना रखता है। इसलिए महर्षि दयानंद जैसा गुरू और आर्य समाज जैसा संगठन दुनिया में नहीं है। हम सबको महर्षि दयानंद सरंस्वती के कार्यो को आगे बढ़ाना है। वर्तमान में अमेरिका के 15 राज्यों में आर्य समाज या आर्य समाजी रहते हैं हमें हर स्टेट में आर्य समाज और वैद ज्ञान को पहुंचाना है। महर्षि दयानंद के अधूरे कार्यों

- *जारी पृष्ठ 7 पर*

ध्वजारोहण से अमेरिका महासम्मेलन का शुभारम्भ करते श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, साथ में है सर्वश्री स्वामी आर्यवेश, साध्वी उत्तमायति, स्वामी वेदानन्द सरस्वती, स्वामी सम्पूर्णानन्द, गिरीश खोसला, डॉ. विनय विद्यालंकार, जोगिन्द्र खट्टर एवं अन्य। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते श्रीमती नीलम एवं श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं अन्य।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, न्यूयार्क (अमेरिका) 18-19-20-21 जुलाई, 2024 के अवसर पर ऑनलाइन सम्बोधित करते योगगुरु स्वामी रामदेव जी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं महासम्मेलन में उपस्थित आर्यजनों से भरा होफ्स्ट्रा यूनिवर्सिटी का सभागार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, न्यूयार्क
18-19-20-21 जुलाई, 2024 के अवसर पर

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजन हेतु गठित ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं जे.बी.एम. अध्यक्ष

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी द्वारा दिया गया उद्‌बोधन

आज हम यहाँ एक महत्वपूर्ण अवसर पर एकत्रित हुए हैं, जहाँ हम ऋषि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें वर्ष का उत्सव मना रहे हैं। इस ऐतिहासिक आयोजन के माध्यम से हम न केवल अपने गौरवशाली अतीत को स्मरण कर रहे हैं, बल्कि भविष्य की दिशा भी निर्धारित कर रहे हैं।

इस पर्व का नाम 'ज्ञान ज्योति' रखने के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण है। ऋषि दयानंद सरस्वती ने मानवता को ज्ञान और तर्क की ओर अग्रसर किया। उनके नेतृत्व में समाज ने अंधकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान किया। ऋषि दयानंद न केवल एक महान समाज सुधारक थे, बल्कि एक क्रांतिकारी विचारक भी थे। उन्होंने अंधविश्वास और धर्म तथा परंपराओं के नाम पर होने वाली अवैज्ञानिक प्रथाओं की कड़ी निंदा की। उन्होंने सच्चे अर्थों में समाज को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर अग्रसर किया। ऋषि दयानंद ने अपने समस्त ज्ञान और विवेक का श्रेय वेदों को दिया और उनका उद्‌घोष था, "वेदों की ओर लौटो।" वेदों में निहित ज्ञान को उन्होंने समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने का प्रयास किया, जिससे समाज का हर वर्ग शिक्षा और ज्ञान से आलोकित हो सके। 'ज्ञान ज्योति पर्व' उन्हीं महान विचारों और सिद्धांतों की अभिव्यक्ति है, जो अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का मार्ग दिखाते हैं।

आज के ये उत्सव आर्य समाज संगठन के पुनरुत्थान के अवसर हैं। इसकी महत्ता केवल ऐतिहासिक नहीं है, बल्कि समाज सुधार और मानव कल्याण में इसकी प्रासंगिकता कई गुना बढ़ गई है। हम सभी जानते हैं कि अमेरिका और भारत का ऐतिहासिक संबंध सदियों पुराना है। महर्षि दयानंद जी के लम्बे समय तक सहयोगी रहे कर्नल अल्काट अमेरिका के ही थे। आर्यसमाज की विचारधारा तो अवश्य ही 19 वी सदी के आरंभ में आ गई थी किन्तु अगर वर्तमान स्थिति की बात करें, तो आर्य समाज को यहाँ जो ताकत मिली है, वह आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के गठन के बाद ही संभव हो पाई है। इसकी उपलब्धियों को शब्दों में वर्णित करना और गिनना असंभव है। मैं समझता हूं अब प्रभावी और अधिक संगठित कार्य के लिए एक सुसज्जित केंद्र आवश्यक है और मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि यहाँ की टीम जल्द ही आर्य समाज के लिए अन्य समान संगठनों की तरह एक केंद्र की योजना बना रही है।

मैं आपके साथ यह साझा करते हुए प्रसन्न हूँ और आप में से कुछ पहले से ही जानते हैं कि भारत में आर्य समाज का अंतर्राष्ट्रीय स्तर का एक केंद्र निर्माणाधीन है। यह एक विशाल परियोजना है और इसे चरणों में पूरा किया जाएगा।

यहाँ मैं आज की सभा का ध्यान एक महत्वपूर्ण चिंता की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिसकी हम जब भी चर्चा करते हैं, कि आधुनिक पीढ़ी के मन में आर्य समाज की विचारधारा को कैसे बढाया जाए? हमें इस पर गहरा से विचार करना चाहिए और अपने नियमित बैठकों और समूहों में इन विचारों पर चर्चा करनी चाहिए।मेरी व्यक्तिगत राय है कि आर्य समाज का परिचय बच्चो को कम उम्र में ही करवाना एक बड़ा अंतर ला सकता है। हम सभी अभी भी अपने बचपन की यादें और हर रविवार को निकटवर्ती आर्य समाज केंद्र जाने की यादों का ज़िक्र करते हैं और मुझे यकीन है कि यही प्रेरणा VSS (वैदिक संस्कृति स्कूल) और दयानंद बाल वाटिका परियोजना के पीछे रही है। Houston Arya Samaj के श्री देव महाजन जी और उनकी टीम द्वारा सोची गई VSS परियोजना बहुत सफल रही है और मुझे लगता है कि इसे अन्य देशों में अपनी-अपनी आर्य समाज टीमों द्वारा अपनाया जाना चाहिए।

मैं अक्सर अमेरिका के युवाओं से मिलता हूँ जो कहते हैं कि उनके घर से निकटतम आर्य समाज 300-400 या उससे अधिक किलोमीटर दूर है। मैं सुझाव देता हूँ कि हमें छोटे समूह में काम करना चाहिए और नियमित गतिविधियाँ रखनी चाहिए ताकि हम समान विचारधारा वाले लोगों को जोड़ सकें और उन्हें आर्य समाज से जुड़ने की प्रेरणा दे सके। चाहे भवन ना हो पर हमारे छोटे-छोटे ग्रुप जरूर संगठित हों। अक्सर आर्य समाज और उसकी शिक्षाओं पर आधारित अंग्रेजी साहित्य की भी आवश्यकता महसूस होती है । हम भारत में इस पर काम कर रहे हैं और यहाँ की टीम से भी अनुरोध करते हैं कि इस दिशा में कार्य करें। पहले से ही बहुत कुछ किया गया है और योजनाएँ भी बना जा रही हैं, फिर भी मुझे लगता है कि हम इस पर थोड़ा और जोर दे सकते हैं।

हम सभी आर्य समाज का हिस्सा होने पर गर्व करते हैं, जो वेद के सिद्धांतों और शिक्षाओं पर आधारित है। वेद, ईश्वर द्वारा मनुष्य को दिया गया मार्गदर्शन है। जिस प्रकार एक मोबाइल फ़ोन के खरीदने के बाद उसके user manual को पढ़कर हम उसका optimum utilization कर पाते हैं उसी प्रकार वेद के ज्ञान एवं सिद्धांतों के आधार पर मनुष्य अपने जीवन की उपयोगिता को बेहतर बना सकता है, यही मनुर्भव का सार है। हम हमेशा से मजबूत थे और रहेंगे क्योंकि हमारे पास ज्ञान और बुद्धिमत्ता का सबसे शक्तिशाली स्रोत है वेद, जो इस पृथ्वी के सबसे पुराने और सर्वमान्य अमूल्य ग्रंथ हैं।

आज की contemporary problems चाहे राजनीतिक हों या social, pkgs Middle East, Russia या Europe के किसी हिस्से की अशांति हो, या फिर illiteracy, malnutrition, भुखमरी जैसी सामाजिक बुराइयाँ हों, हर समस्या का समाधान वेदों के ज्ञान में निहित है और इसलिए ऋषि दयानंद ने हमेशा ज्ञान प्राप्ति के लिए सभी को प्रेरित किया।

आज के IT युग में हम भी समय के साथ विकसित होने और आर्य समाज और उसकी गतिविधियों को मजबूत करने के लिए विभिन्न platforms और apps की मदद से अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं। Youth को Target करते हुए हमने विभिन्न परियोजनाएँ शुरू की हैं, जो आप जैसी मजबूत टीमों के सहयोग से आगे बढ़ रही हैं। मैं यहाँ mention करना चाहूँगा ऐसे कुछ initiatives को, जिन्हे न केवल financial support मिली है, बल्कि time to time guidance भी आर्य समाज USA की टीम से प्राप्त हुई ।आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुसार, एक व्यक्ति को केवल अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं होना चाहिए, बल्कि अपने आसपास के लोगों की उन्नति में सहायक होना चाहिए। बालवाड़ी परियोजना, जो भारत के ग्रामीण क्षेत्र में एकल शिक्षक (single teacher led) informal स्कूल के रूप में कार्य करती है।

Civil services aspirants की मदद करने वाली प्रतिभा परियोजना भी एक महान पहल है।

भूषण वर्मा जी और यहाँ की टीम द्वारा संचालित प्रगति scholarship एक दूरदर्शी परियोजना है जो talented, underprivileged students dh higher studies sponsor करती है।

कोविड के समय में आर्य समाज USA टीम की सहायता से भारत में ऑक्सीजन कंन्ट्रेटर बैंक की स्थापना हुई , जिससे अनगिनत जरूरतमंदों को मदद मिली। जब पूरी दुनिया पीड़ित थी, तब आप सभी ने **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** के मंत्र को अमल में लाया। इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

मैं इस विशाल आयोजन के लिए टीम को बधाई देना चाहता हूं, जिसमें दुनिया भर से सहभागिता देखी गई है, जैसा कि 2018 में भारत में देखा गया था। मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि अगला मेगा, ऐतिहासिक और अभूतपूर्व आयोजन 2025 में भारत में देखा जाएगा, जो एक अकल्पनीय और अनोखा होगा. ये कार्यकर्म आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।

व्यक्तिगत स्तर पर, मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूँ कि हमें अपनी दैनिक दिनचर्या में संध्या और स्वाध्याय को शामिल करना चाहिए, इससे परिवार और आसपास के लोगों को प्रेरणा मिलेगी।

150 वर्ष के उत्सव के लिए हमारे पास लगभग 18 महीने बाकी हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आर्य समाज की विचारधारा को 200 नए लोगों तक पहुँचाने और उन्हें इस सुंदर और सबसे तर्कसंगत जीवन शैली से परिचित कराने का संकल्प लें। मैंने भी इसके लिए संकल्प लिया है।

200वीं जयंती का उद्‌घाटन समारोह अत्यंत ऊर्जावान था, जिसमें माननीय प्रधान मंत्री जी का मुख्य अतिथि के रूप में आगमन हुआ। माननीय राष्ट्रपति जी का टंकारा पधारना और ज्ञान ज्योति पर्व के समापन समारोह को सराहना एक विशेष उपलब्धि थी। यहाँ के प्रधान भुवनेश जी और कई अन्य महानुभाव विशेष रूप से इस आयोजन में पधारे। लगातार कार्यक्रमों का सिलसिला आरंभ हुआ, गाँव-गाँव, घर-घर कार्यक्रम चले, जिसकी जैसी क्षमता थी, वैसा कार्य किया गया। देश-विदेश में आयोजन हुए और यह श्रृंखला दो वर्षों तक चलनी है।आर्य समाज के 150 वर्ष भी एक महान अवसर है, इसके आयोजन भी भव्य होंगे। इन आयोजनों की श्रृंखला में भारत के बाहर आयोजित होने वाले इस विशेष आयोजन के लिए सभी को शुभकामनाएँ। हमें उन महान आत्माओं को भी याद करना चाहिए जिन्होंने इस मशाल को आगे बढ़ाया और आने वाली पीढ़ियों तक इस प्रकाश को पहुँचाने की जिम्मेदारी ली। आज हम यहाँ, ऋषि दयानंद के शब्दों और शिक्षाओं की जन्मभूमि से दूर पश्चिम में बैठे हैं। यह उपलब्धि एक दिन में नहीं हुई है, बल्कि इसका श्रेय उन पीढ़ियों को जाता है जिन्होंने इस महान उद्‌देश्य के लिए

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

बम्बई में आर्य समाज की स्थापना

गतांक से आगे-

वह आर्यत्व के पोषक और प्रतिनिधि थे। आर्यसमाज नाम इसी बात को सूचित करता है। यह नाम सभी आर्य-पुरुषों के हृदयों में ठीक जांच और आर्यसमाज बनाने की तैयारियां होने लगीं।

हरेक समाज के लिए कोई न कोई आधार चाहिए। आर्यसमाज का मूल वेद हैं, परन्तु अभी तक वे अगम्य सागर थे, जिन तक पहुंचना किसी आर्य-पुरुष की शक्ति में नहीं था। अभी वह समय नहीं आया था कि वेदों के आधार पर ही आर्यसमाज की स्थापना कर दी जाती। आधार में रखने के लिए एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता थी जो लोगों की समझ में आ सके, ताकि प्रत्येक आर्य-पुरुष आर्यसमाज में आने से पूर्व जान सके कि किन सिद्धान्तों को माननेवाला पुरुष आर्यसमाज में प्रविष्ट हो सकता है। सौभाग्य से इस समय ऐसा ग्रन्थ भी तैयार हो चुका था जब महर्षि जी अलीगढ़ में प्रचार कर रहे थे, तब राजा जयकृष्णदास जी ने प्रार्थना की थी कि एक ऐसा ग्रन्थ प्रकाशित कर दिया जाय जिसमें सब सिद्धान्तों का समावेश हो। महर्षि जी ने उस प्रस्ताव को स्वीकार करके अपने व्याख्यानों का संग्रह करा लिया और वह सत्यार्थ प्रकाश के नाम से प्रकाशित हुआ। उस समय सत्यार्थ प्रकाश प्रथम बार प्रकाशित हो चुका था। समय अनुकूल था, परन्तु महर्षि जी को शीघ्र ही बम्बई से सूरत जाना पड़ा। इससे कुछ समय के लिए समाज की स्थापना विलम्बित हो गई। 24 नवम्बर 1874 से यह परामर्श आरम्भ हुआ था, लगभग 60 सज्जनों ने सभासद् बनने की प्रतिज्ञा की थी। दिसम्बर में महर्षि जी को बम्बई से जाना पड़ा। 3 मास के लगभग गुजरात प्रान्त में प्रचार करने के अनन्तर जब जनवरी में फिर महर्षि जी बम्बई गए, तब आर्यसमाज की स्थापना का प्रस्ताव अधिक उत्साह से उठाया गया। इस बार यत्न शीघ्र ही सफल हो गया। राजमान्य राजश्री पानाचन्द्र आनन्द जी सर्वसम्मति से नियमों का मसव्विदे बनाने के लिए नियत किये गए। उनके बनाए हुए मसव्विदे पर विचार करके चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं. 1932, तदनुसार 10 अप्रैल 1875 ई. के दिन, गिरगांव में डॉ. मानिकचन्द्र जी की वाटिका में नियमपूर्वक आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज के 28 नियम बनाए गए। वर्तमान 10 नियम लाहौर में पीछे से बनाए गए थे। प्रारम्भिक 28 नियमों में सभी कुछ हैं; उद्देश्य, नियम, उपनियम आदि सब कुछ उनमें आ गए हैं। यह पहला अवसर था कि महर्षि दयानन्द जिन सिद्धान्तों का प्रचार करना चाहते थे, उनके माननेवाले लोग एक सूत्र में पिरोए जाकर संगठित हुए। आर्यसमाज की नींव में कौन-कौन से विचार कार्य कर रहे हैं-यह जानना हो तो इन प्रारम्भिक 28 नियमों का विवेचन आवश्यक है। ऐसा विवेचन मनोरंजकता से भी खाली न होगा।

बम्बई आर्यसमाज का तत्कालीन पहला नियम बड़ी स्पष्टता से आर्यसमाज के उददेश्य को प्रकाशित करता है। वह कहता है-सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है-आर्यसमाज का उद्देश्य सब मनुष्यों का हित करना है। यह विस्तृत उद्देश्य है, जिससे आर्यसमाज की स्थापना हुई है। संसार में इससे बढ़कर व्यापक उद्देश्य नहीं हो सकता। दूसरा नियम बताता है कि इस समाज में मुख्य स्वत: प्रमाण वेदों को ही माना जाएगा। इस वाक्य में आर्यसमाज का धर्मिक आधार स्पष्ट रूप से बता दिया गया है। केवल वेद ही स्वत: प्रमाण और धर्म के मूल आधार हैं। अन्य ग्रन्थ चाहे वे आर्ष ही क्यों न हों, जहां तक वेदानुकूल न हों, शब्द प्रमाण नहीं हैं। यह नियम बड़ा स्पष्ट है। यदि इसके महत्त्व पर पूरा ध्यान दिया जाय तो आर्यसमाज की प्रवृत्तियां शाखाओं में बिखरने से बचाई जा सकती हैं। तीसरे और चौथे नियम में प्रधान और शाखा-भेद

से आर्यसमाजों के दो भेद किये गए हैं। इन नियमों में प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक सभा आदि विस्तृत संगठनों की कल्पना है। पांचवां नियम समाज में संस्कृत और आर्यभाषा के पुस्तकालय की आवश्यकता बताता है और यह भी आशा दिलाता है कि आर्यसमाज की ओर से आर्य-प्रकाश नाम का साप्ताहिक पत्र निकलेगा।

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
WWW.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Establishing Arya Samaj in Mumbai

They got success easily, 'Rajshri Panachandra Anand' was appointed unanimously to write down the rules. After discussing about the matter proper by him, 'ARYA SAMAJ' was established on Chaitra Shudi 5 Samwat 1932 that is 10 April, 1875 in Vatika of Manik Chandra in Girgaon, 28 rules were setup for Arya Samaj, Present 10 rules were decided after words in Lahore, in beginning 28 rules, there are included aim, rules sub rules etc. every needed subjects. This was the people who believing in the rules given by Swamiji, were organized systematically. To know which feelings and views are being followed by followers of Swamiji. We will have to think of those 28 rules such thinking will be interesting also.

1st rule of Arya Samaj of Mumbai of that time very clearly indicates the aim of Arya Samaj. It says "For welfare and safety of all, Arya Samaj is important.It declares "Aim of Arya Samaj is welfare of all. This is the Vast aim with which Arya Samaj was established. There can be no other great aim in the world, 2nd rule says "Ved will considered the proof. Dharmic base in clear in this rule. Only Ved is proof of itself and bases of Dharm, may be related to 'Arsh' but if they are given in the Ved, are not the proof of Satyaa. This rule is very clear, if we take care of its importance. The concept of Arya Samaj may be scattered into branches. In 3rd and 4th rules, Arya Samaj has been divided into two main concepts, Main and branches. In these rules there is concept of Pratinidhi Sabha and Sarvadeshik Sabha, fifth rule is about library having books of Sanskrit and Arya language. There will be weekly paper 'Arya Prakash'. While considering these rules, conditions of Mumbai were taken care of. In 7th rule there in order of appointing two Adhikari's (Officers). One is Pradhan (President) and the 2nd in Mantri (secretary). Appointing Deputy President and secretary was considered not necessary. 2nd part of this rule is very important Both men and women will be the members. This rule is often ignored in many branches of Arya Samaj. Ignoring Lady member is more dangerous than establishing Arya Samaj for ladies only. The result in field of ladies becomes very small. They cannot increase their knowledge fully. They are not able to go out of small area. If both men and ladies are there in the same organisation sit and discuss together on important topics. It is quite sure that ladis will have more chances to enhance their knowledge and there may be double power of Arya Samaj and work will become strong.

8th rule describes the ability of the members nice, and good charactered, persons thinking and wording for welfare of others will be given membership. Though one's rule seems to be smaller and insufficient but it is surprising that this rule shows the feelings of Swamiji clearly. Member of Samaj should be a gentle and good charactered. Nice behavior has been considered as the best quality of the member. There is not so clear reference of good behavior; This is the reason, sometimes believing is considered more important than doing it. Rules in the beginning gave preference for doing. Bad charactered and untrue member should not be allowed to remain member even for a second. 10th rule orders for weekly satsang. In the beginning satsang was held on Saturdays but after word it was changed to Sundays.

11th rule is about programs that singing, reciting Mantras and explanation of the Mantras. In this rule weekly Satsang should be held in various fields. Satya Dharm and Satya police have been kept apart. There will be discussion not only about rules, their practical asked will also be discussed.

People who consider that there is discussion about rules only, they should get their doubt removed by studying 11th rule seriously. In 12th rule it has been said that for all the members, 1 percent of their income should be given as donation. With that income Arya Samaj, Arya school and Arya newspaper should be run smoothly. Idea of Arya School was thought and discussed in the beginning that is not a new idea. Swamiji thought that Arya school should be opened for giving sanskars to the children of Arya members. 16th rule clarifies the aim of starting Arya Vidyalaya. There will be teaching and practice of Arsh books, like Vedas and other Vedic literature.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW. vedicprakshan.com ir contact - 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष

स्वामी राम भद्राचार्य जी का अनर्गल प्रलाप

से विद्या का बोध होवे, उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी विशेष मनुष्य की संज्ञा या विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं है।"

6. क्या वेदों में रामायण के श्रीराम-सीता का वर्णन है ?

वेदों में राम, कृष्ण आदि शब्दों के नाम पर ही नामकरण हुए हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वेदों में श्री राम और श्री कृष्ण जी आदि का वर्णन हैं।

ऋग्वेद 2/2/8 में आये राम्या: का अर्थ स्वामी दयानन्द ने रात्रि किया है। ऋग्वेद 6/65/1 में आये राम्यासु का अर्थ स्वामी दयानन्द ने रात्रि किया है। ऋग्वेद 3/34/12 में आये रामी: का अर्थ स्वामी दयानन्द ने आराम की देने वाली रात्रि किया है। ऋग्वेद 10/3/3 में आये राम शब्द का सायण ने अर्थ कृष्ण रंग वाला किया है। इस प्रकार से राम शब्द के अर्थ वेदों में काले रंग, अन्धकार और रात्रि के रूप में हुए हैं। इनसे रामायण के पात्र श्रीराम किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं होते। वैद्यनाथ शास्त्री और अमर सिंह जी निरुक्त 12/13 का उद्धरण देकर राम शब्द से काला ग्रहण करते हैं।

अथर्ववेद 13/3/2668 में अर्जुन को द्रौपदी (कृष्णा) का पुत्र बताया गया है। वेदों में इतिहास मानने वाले क्या यह स्वीकार कर सकते हैं कि अर्जुन द्रौपदी का पुत्र था ? नहीं। स्वामी विद्यानन्द शतपथ ब्राह्मण 9/2/3/30 का प्रमाण देते हुए लिखते हैं कि यहाँ कृष्णा अर्थ रात्रि का है एवं रात्रि से उत्पन्न होने आदित्य अथवा दिन (अर्जुन) उसका पुत्र है । इस प्रकार से यहाँ इतिहास वर्णन नहीं है ।

7. क्या वेदों में श्री कृष्ण-राधा, अर्जुन आदि महाभारत के पात्रों का वर्णन है ?

वेदों में कृष्ण-राधा शब्द अनेक मन्त्रों में आया है। वेदों में इतिहास मानने वाले प्राय: कृष्ण शब्द से महाभारत के श्री कृष्ण जी का वेदों में वर्णन दर्शाने का प्रयास करते हैं। राधा का वर्णन महाभारत में नहीं मिलता। वेदों में कृष्ण शब्द का अर्थ काला रंग, आकर्षक, काला दिन, काला बादल आदि हैं ।

स्वामी दयानन्द भाष्य अनुसार ऋग्वेद 1/58/4 में कर्षणरूप गुण, ऋग्वेद 1/73/7 और ऋग्वेद 1/92/5 में काला रंग, ऋग्वेद 1/101/4 में विद्वान्, ऋग्वेद 1/115/4 में काले-काले अन्धकार, ऋग्वेद 1/164/47 में खींचने योग्य, ऋग्वेद 6/9/1 में रात्रि, ऋग्वेद 7/3/2 में आकर्षण करने योग्य, यजुर्वेद 21/52 में भौतिक अग्नि से छिन्न अर्थात् सूक्ष्मरूप और पवन के गुणों से आकर्षण को प्राप्त, यजुर्वेद 24/30 में काला हरिण, यजुर्वेद 24/40 में काले रंग वाला, यजुर्वेद 29/58 में काले गरने वाला पशु, यजुर्वेद 29/59 में काला बकरा, यजुर्वेद 30/21 में काले रंग वाले आदि अर्थ किया है।

ऋग्वेद 3/51/10 में राधा पद आता है जिससे कुछ लोगों में राधा का वर्णन मानते हैं। स्वामी दयानन्द ने राधा का अर्थ धन किया है। ऋग्वेद 1/22/7 में आये राधम का अर्थ स्वामी दयानन्द ने विद्या सुवर्ण वा चक्रवर्ती राज्य आदि धन के यथायोग्य किया है।

ऋग्वेद 6/9/1 में आये कृष्ण और अर्जुन का अर्थ स्वामी दयानन्द रात्रि और सरलगमन आदि गुण क्रमश: करते हैं। यजुर्वेद 23/18 में आये अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का अर्थ स्वामी दयानन्द माता, दादी और परदादी करते हैं।

8. वेदों में इतिहास होने की मान्यता अज्ञानता का बोधक है।

अथर्ववेद 3/17/8 में आया है कि जिस प्रकार से ईश्वर ने इस कल्प में सृष्टि की रचना की है, वैसे ही पूर्व कल्प में की थी और आगे भी करेगा। कल्प के आरम्भ में ईश्वर वेदों का ज्ञान प्रदान करता है। इसलिए हर कल्प के आरम्भ में भी वैसे ही करेंगे जैसे करते आये हैं जो लोग वेदों में श्रीराम, कृष्ण आदि का इतिहास मानते हैं। क्या वे यह भी मानेंगे की हर सृष्टि के हर कल्प में श्रीराम को वनवास का कष्ट भोगना पड़ा ? क्या हर कल्प में सीता हरण हुआ ? क्या हर कल्प में कृष्ण को कारागार में जन्म लेना पड़ा ? क्या हर कल्प में यादव कुल का नाश हुआ ? नहीं ऐसा कदापि सम्भव नहीं है। ईश्वर द्वारा सभी सांसारिक वस्तुओं के नाम वेद से लेकर रखे गए हैं, न कि इन नाम वाले व्यक्तियों या वस्तुओं के बाद वेदों की रचना हुई है। जैसे किसी पुस्तक में यदि इन पंक्तियों के लेखक का नाम आता है तो वह इस लेखक के बाद की पुस्तक होगी। इस विषय में मनुस्मृति 1/21 में आया है कि ब्रह्मा ने सब शरीरधारी जीवों के नाम तथा अन्य पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव नामों सहित वेद के अनुसार ही सृष्टि के प्रारम्भ में रखे और प्रसिद्ध किये और उनके निवासार्थ पृथक्-पृथक् अधिष्ठान भी निर्मित किये।

इन प्रमाणों से रामभद्राचार्य जी का विचार असत्य सिद्ध होता हैं। इस पर भी उन्हें शंका है तो आर्यसमाज के द्वार इस विषय पर शास्त्रार्थ के लिए खुले हैं।

पृष्ठ 2 का शेष

नाम लिखने पर एकतरफा चीख....

और अमजद भट्टी ये दोनों ही आम लोगों को इंसानी शरीर की गंदगी मिलाकर खाना खिला रहे थे। जब यहां के ग्राहकों को इंफेक्शन की शिकायत होने लगी, तो जांच की गई और पता चला कि सभी को फूड पॉइज़निंग हुई है और जांच में खुलासा हुआ कि जो खाना इन लोगों ने खाया था, उसमें इंसानी शरीर की गंदगी थी। दरअसल, मामला मजहब का नहीं है, मामला कारोबार या धंधे का है। हालां कि सुप्रीम कोर्ट ने यूपी प्रशासन के इस आदेश पर रोक लगा दी है और इसके बाद तुरंत दुकानदारों ने अपने ढाबों और दुकानों से बोर्ड भी हटा दिये। इसको लेकर विपक्षी दलो और मुस्लिम दुकानदारों ने कोर्ट के निर्णय का स्वागत किया। यहां पर एक ही प्रश्न है कि यूपी प्रशासन द्वारा किसी एक मत या संप्रदाय के दुकानदारों को नहीं बल्कि सबके लिए आदेश जारी किया था तो फिर केवल एक तरफा चीख पुकार क्यो हुई ?

-संपादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

देश की विभूतियों ने हमेशा .....

रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द घोष एवं अन्य अनेक महापुरुषों ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी कृतज्ञता और आभार पूर्ण वचन उन्मुक्त हृदय से प्रस्तुत किए हैं। इस क्रम में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 12 फरवरी 2023 को इन्दिरा गाँधी इंडोर स्टेडियम के प्रांगण में उनकी 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों का शुभारंभ करते हुए कहा था कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का दिखाया मार्ग करोड़ों लोगों में आज भी आशा का संचार करता है, 200 वर्षों के बाद भी महर्षि दयानंद हमारे दिलों में जिंदा हैं, महर्षि दयानंद जी ने वेदों के बोध को मानव समाज में पुनर्जीवित किया, सामाजिक भेदभाव, ऊंच-नीच, छुआछूत और महिलाओं के सम्मान में महर्षि दयानंद ने विशेष अभियान चलाए। प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि जो बीज महर्षि दयानंद ने बोया था, वह आज आर्य समाज के रूप में एक वटवृक्ष बनकर पूरी मानवता को छाया दे रहा है। महर्षि दयानंद ने लाखों क्रांतिकारियों के भीतर राष्ट्रप्रेम की लौ जगाई थी।

लेकिन विडंबना देखिए एक तरफ़ भारत राष्ट्र के महापुरुषों ने वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति अपने हृदय के उदगार प्रस्तुत करते हुए उनके उपकारों को मानव के कल्याण का सेतु बताया। उनके लिए प्रशंसा युक्त वचन बोले।

वहीं अब राम भद्राचार्य जी को कौन समझाए कि उनके प्रति आप यह क्या मनगढ़न्त बातें बोल रहे हैं। आपके असत्य और निराधार वचन पूरी ऋषि परम्परा का अपमान है। इस अमानवीय ओछेपन की बात को सुनकर पूरे आर्य समाज में गहरा रोष है, राम भद्राचार्य जी अपने शब्द वापस लें और आर्य समाज से माफ़ी माँगें। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 4 का शेष

को पूरा करना है। महर्षि की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस पर 2025 में भारत में होने वाले बृहद अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए सभी को आमंत्रण देते हुए आपने आर्यजनों से 4 संकल्प लेने का आवाहन किया। जिनमें सबसे पहले ईश्वर की उपासना, स्वाध्याय का नियम, मानव सेवा का व्रत और संगठन की मजबूती के लिए अपने निकटबर्ती आर्य समाज में साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक सत्संग अवश्य जाए। जैसे ही आप इन चारों संकल्पों को हृदय से निभायेंगे तो आर्य समाज के कार्य, प्रचार प्रसार आगे बढ़ने लगेगा। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, अमेरिका की समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, सभी देशों से आए हुए सभाओं के अधिकारी और सदस्यों को दिल्ली सभा तथा सार्वदेशिक सभा की ओर से बधाई दी।

अमेरिका न्यूयार्क में यह अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आपमें ऐतिहासिक और अनेक उपलब्धियों के लिए आर्य समाज के इतिहास में अंकित हो गया। अमेरिका सभा के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्ताओ और सदस्यों का आर्य समाज और महर्षि दयानंद के प्रति समर्पण का भाव अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय सिद्ध हुआ। सम्मेलन की संपूर्ण व्यवस्थाएं अपने आपमें आदर्श थीं, आर्य परिवारों के सभी सदस्यों की उपस्थिति प्रशंसनीय रही, अनुशासन और व्यवस्था अनुकरणीय थी, कार्यक्रमों का संचालन और संयोजन अपने आप में बहुत अनुपम था। आतिथ्य सत्कार की भावना और कामना अतिथि यज्ञ के समान थी। आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी ने सभी महानुभावों का आभार किया और प्रेम सौहार्द के वातावरण में संपन्न हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी .....

अपना जीवन और समय समर्पित किया।आज हम उन महान विभूतियों को याद करें जिन्होंने सर्वप्रथम भारत की धरा से यहाँ आकर वेद की ज्योति आधुनिक युग में प्रज्ज्वलित की थी। दयानंद के प्रथम शिष्यों में से श्रीमान .....यहाँ आए और प्रचार कार्य हुआ।

यहाँ के मूल निवासी श्रीमती मैसी के सुपुत्र .....भी भारत के गुरुकुल में पढ़ने गए, परंतु कुछ परिस्थितियों के कारण वे ज्यादा नहीं रह सके और वापस आ गए। आज हमें उन कड़ियों को दोबारा से जोड़ने के बारे में सोचना है।150 वर्ष का समय किसी भी संगठन के लिए न कम है न ही बहुत ज्यादा। हमें गर्व है कि हमारी पहली पीढ़ी के कार्यकर्ताओं और प्रचारकों ने ऋषि दयानंद की विचारधारा को विश्व के हर महाद्वीप में पहुँचाया। परंतु हमें आज यह भी सोचना होगा कि पिछले 50 वर्षों में हमारा विस्तार क्यों रुक गया। जिसका विस्तार रुक जाता है, वह संगठन सिमटने लगता है। आज यह चिंतन आवश्यक है कि भविष्य में हमें अपने आप को संभालते हुए आर्य समाज को किस दिशा में लेकर जाना है। As we conclude this remarkable event, let us remember the powerful motto, "Krinvanto Vishvam Aryam," which means " Make the World Noble. This guiding principle of Arya Samaj has inspired us for 150 years and will continue to do so in the future. We extend our heartfelt appreciation and warm wishes for this grand occasion. We look forward to the strengthening of our initiatives, events, and celebrations as we foster connections between the US and India. May our efforts today pave the way for a brighter. more noble future. Thank you all for your participation and support. **जय हिन्द ! जय भारत ! वन्दे मातरम !** Long Live America !

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 जुलाई, 2024 से रविवार 28 जुलाई, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 25-26-27/07/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24, जुलाई, 2024

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

आर्य समाज की पहल

सुशील राज

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

द्वारा

संघ लोक सेवा आयोग की

सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा

ऑनलाइन परीक्षा दिनांक 15 सितंबर 2024, पूर्वाह्न 11:00 बजे

निःशुल्क

आज ही रजिस्टर करें

प्रमुख सुविधाएं

- शिक्षण
- मार्गदर्शन
- रहना
- खाना

इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें।

वेबसाइट : www.pratibhavikas.org

आवेदन की अंतिम तिथि - 31 अगस्त 2024

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

आर्य परिवारों के विवाह योग्य सदस्यों के लिए
मनपसन्द जीवनसाथी खोजने की ऑनलाइन सुविधा

Arya Samaj Matrimony

matrimony.thearyasamaj.org 7428894012

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — पॉकेट संस्करण

विशिष्ट पॉकेट संस्करण — स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — उपहार संस्करण

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह